REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

सीधी जिले के कामकाजी महिलाओं का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

प्रतिमा कौल[1] , डॉ. एस.एम. मिश्रा[2]
[1]शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र,संजय गांधी स्मृति शासकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

वर्तमान समय में नवीन प्रतिबद्धता व कौशल विकास के साथ–साथ कामकाजी महिलाओं के परिवारों के प्रति दिन–प्रतिदिन बढ़ती अपेक्षायें एक अलग प्रकार से उभर कर सामने आ रही हैं, जिसके कारण यह कामकाजी महिलाओं में अनेक प्रकार के तनाव एवं समस्या उत्पन्न करने के कारण बन रहे हैं। आधुनिक परिवेश में प्रत्येक कार्यों पर कामकाजी महिलाओं को देश में या देश के बाहर हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। शासन स्तर पर प्रदान की जाने वाली शिक्षा पद्धति, जागरूकता, कौशल संवर्द्धन एवं महिलाओं हेतु कुशल अवसर दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं तथा कामकाजी महिलायें ऐसे लाभार्जन अवसरों का भी लाभ सकुशल उठाने में स्वयं को सक्षम बना रही है। आज शनैः शनैः शिक्षित वे कामकाजी महिलायें पुरूषों के समानान्तर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर रही है, कामकाजी महिलायें भी विभिन्न प्रकार की सामाजिक भूमिकायें निभा रही हैं यथा शिशुओं का लालन–पालन, माता–पिता की सेवा, शिक्षिका, अपने बुजुर्ग सास ससुर की देखभाल करना और अनेकों ऐसे कार्य जो उनके लिए अत्यन्त ही कठिन कार्य हो जाते हैं। कामकाजी महिलाओं की यह अतिरिक्त जिम्मेदारी एवं कार्यों का दबाब उनके दैनिक जीवन में परेशानियों एवं तनावों को बढ़ाते हैं, विशेष रूप से छोटे शिशुओ वाली कामकाजी महिलाओं में, जो सुनिश्चित रूप से उनके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्द – कामकाजी महिला, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना –

किसी की इच्छा को प्राप्त करने से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक भाव की मासिक स्वास्थ्य का एक काफी महत्वपूर्ण पहलू है। कामकाजी महिलाओं की उपलब्धियां, आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं संतुष्टि जैसे मनोवैज्ञानिक भाव/दृष्टिकोण उनके बीच सकारात्मक भावनाओं का प्रस्फुटन करते हैं। जबकि विफलतायें अक्सर उदासीन हताशा का कारण बनती हैं।[1] कामकाजी महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर रोजगार/स्वरोजगार के सकारात्मक प्रभाव, नौकरी, शक्ति, स्थिति एवं आर्थिक स्वतंत्रता के विशेषाधिकारों से भी आते हैं चूंकि एक महिला की मनौवैज्ञानिक दृष्टि काफी हद तक रोजगार/स्वरोजगार पर निर्भर होती है। समाज में कामकाजी महिलायें अपने व्यवसाय/रोजगार/स्वरोजगार को सकारात्मक रूप से देखती है और महिलाओं का रोजगारोन्मुख होना स्वाभाविक रूप से उसकी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ाता है, उसके आत्मीय मूल्यों की भावना को अग्रसर

करता है और तनाव व पारिवारिक समस्याओं की अन्तर्द्वन्द भूमिका के बीच उन्हें अत्यधिक मनोवैज्ञानिक कल्याण प्रदान करता है। रोजगार भी विवाह में सामंतवादी सम्बन्ध की संभावनाओं को बढ़ाता है। समाज में उपलब्धि आय एवं मान्यता की भावना कामकाजी महिलाओं को अपने रोजगार को पुरस्कृत करने तथा मनोवैज्ञानिक रूप से संतोषजनक मानने में सक्षम भूमिका का निर्वहन करती है। इस संदर्भ में प्रमुख मनोविद वायडैनॉक और डोनेली ने कामकाजी महिलाओं के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के पक्ष में कहा है कि उनके मानसिक स्वास्थ्य हेतु हार्कर रोल रिकॉर्ड वैल्यू का सर्वाधिक महत्व होता है। अतएव रोजगार के एक ऐसे कारक के रूप में भी देखा जाता है कि गृहणियों हेतु बोझ, घरेलू कलह व शिशुओं की देखरेख की जिम्मेदारियों के फलस्वरूप होने वाली खामियों, हानियों एवं कुण्ठाओं से ग्रसित होने के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को कम कर सकता है। यह वास्तव के यथार्थ है कि अब एक महिला ऊपर की ओर लंगर डालती है और स्थिति, मान्यता व शक्ति की प्राप्ति की प्रत्याशा में रोजगार/नौकरी की उम्मीद करती है। मानसिक परिवेश में सामाजिक समर्थन कामकाजी महिलाओं के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को कदापि प्रभावित नहीं करता है बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक भाव को सुदृढ़/सम्बल प्रदान करता है।[2]

भारतीय समाज में महिलाओं से सदैव यह अपेक्षा किया जाता है कि वह समाज के नियमों के अनुरूप ही अपना जीवन व्यतीत करे, उसे उसकी आजादी का अधिकार शायद इस वजह से नहीं प्रदान किया कि वह एक महिला है। कन्या से महिला बनने तक की समयावधि एक सुनिश्चित सामाजिक प्रतिबंध अथवा प्रतिबन्धों के साथ ही बीत जाता है। पहले से ही सुनिश्चित नियमों के अनुसार ही महिलाएं अपना समस्त कार्यों का निर्वहन करती है। परन्तु आधुनिक युग के दौरान काफी कुछ बदलाव देखने को मिलता है। महिलाएं अपने अस्तित्व को स्वयं पहचानने में संलग्न हो चुकी हैं। इनमें शिक्षित माता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षित महिलाएं रूढ़िवादिता को छोड़कर उचित दिशा–निर्देशों के अनुसार ही जीवन हेतु नवीन मार्ग को ढूंढ रही हैं। इस परम्परा को देखा–देखी अशिक्षित महिलाएं भी अपने विचारों में परिवर्तन ला रही हैं तथा अतिशीघ्र ही सामाजिक क्रांति एवं विचार धाराओं में भी बदलाव होगा। महिलाओं के जीवन स्तर में काफी बदलाव परिलक्षित हुआ है। उनका सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में दृढ़ता आयी है। कामकाजी महिलाओं ने अपने जीवन शैली को सुधारने का सफल प्रयास किया है, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति उच्च हो रही है। परिवार के सदस्यों की आवश्यकता से सम्बन्धित सामग्रियों की प्रतिपूर्ति हो रही है।

विश्लेषण –

आज कामकाजी महिलाओं को कार्य के तनाव एवं पारिवारिक जटिलताओं के बीच अन्तर्द्वन्द का सामना करना पड़ रहा है, समाज की सर्वाधिक कामकाजी महिलायें कार्यों के दबाब के कारण अपने पारिवारिक दायित्वों की कुशलता व सफलतापूर्वक निभाने में असमर्थ होती जा रही है, क्योंकि कामकाजी महिलाओं को वहां एक ओर व्यावसायिक संगठनों, शिक्षण संस्थानों एवं स्वरोजगार के विकासात्मक मार्गों में आने वाले व्यवधानों का हल ढूंढने का सार्थक प्रयास करने का दायित्व का दबाब उनके ऊपर रहता है, तो वहीं दूसरी ओर घर के कार्यों, पति सेवा, शिशु लालन पालन, सास–ससुर की सेवा, बुजुर्ग मां–बाप की देख रेख, देवर से कलह, और परिवार के अन्य दूसरे व्यक्तियों के दबाव के तनाव को भी झेलना पड़ रहा है, ऐसी स्थिति में कामकाजी महिलाओं की मनोदशा अच्छी नहीं होती है। इस दृष्टि से शोधकर्ता ने सीधी जिले की कुल 300 कामकाजी महिलाओं से प्राथमिक स्तर पर सर्वेक्षण कर उनके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन करने हेतु तथ्यों को सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है–

सारणी क्रमांक 1

कामकाजी महिलाओं के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों का विवरण

क्रमांक	प्रभावित करने वाले कारक	संख्या	प्रतिशत
1	पारिवारिक तनाव	183	61.00
2	कार्यस्थल के कार्यों का दबाव	42	14.00
3	प्रबन्ध का दबाव	31	10.33
4	गृह कार्यों का तनाव	33	11.00
5	अन्य	11	3.67
	कुल योग	300	100

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से प्रतीत होता है कि यह जिले की कामकाजी महिलाओं के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले विवरण से सम्बन्धित है जिनमें सबसे पहले 183 कामकाजी महिलाओं ने बतलाया कि दोहरी भूमिका से पारिवारिक तनाव उत्पन्न होता है, जिनके प्रतिशत 61.00 है। 42 कामकाजी महिलाओं ने बताया कि कार्यस्थल के कार्यों का दबाव पड़ता है जिनके प्रतिशत 14.00 है। 31 कामकाजी महिलाओं ने बतलाया प्रबन्ध का दबाव उनके मानसिक तनाव का कारण बनती है, जिनके प्रतिशत 10.33 है। 33 कामकाजी महिलाओं ने बतलाया कि घर के कार्यों के दबाव से तनाव उत्पन्न होती है जिनके प्रतिशत 11.00 है और 11 कामकाजी महिलाओं ने बताया कि मानसिक तनाव का अन्य कारण बतलाया है, जिनके प्रतिशत 3.67 है। अतः इससे सुस्पष्ट होता है कि जिले के चयनित सबसे अधिक कामकाजी महिलाओं ने बताया नौकरी करने से सबसे अधिक पारिवारिक तनाव उत्पन्न होती है।

कामकाजी महिलाओं को समाज में मान–सम्मान की भावना से देखा जा रहा है। कुछ कामकाजी महिलाएं अपने परिवार के साथ जीवन व्यतीत कर रही हैं। वह अपने परिवार को देखते हुए अपने कार्यों का निर्वहन कर रही हैं। जिले के कामकाजी महिलाओं का सविचार विधि के माध्यम से चयन कर साक्षात्कार अनुसूची द्वरा प्राथमिक स्तर पर निवास करने से सम्बन्धित आंकड़ों को सारणी क्रमांक 2 में अभिव्यक्त किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक 2

जिले की कामकाजी महिलाओं का निवास करने से सम्बन्धित विवरण

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	परिवार के साथ	180	60
2	स्वतंत्र रूप से	120	40
	कुल योग	300	100

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 को देखने से प्रतीत होता है कि यह जिले के कामकाजी महिलाओं का निवास करने के विवरण से सम्बन्धित है, जिनमें चयन किये गये महिलाओं से निवास करने से सम्बन्धित प्रत्युत्तर प्राप्त किया गया, जिसमें 300 उत्तरदाताओं में 180 उत्तरदाताओं ने बतलाया कि वह परिवार के साथ रहती है, जिनका प्रतिशत 60 है और 120 महिलाओं का मानना है कि वह स्वतंत्र रूप से निवास कर रही है, जिनके प्रतिशत 40 है। अतः इससे सुस्पष्ट होता है कि सीधी जिले में कामकाजी महिलाओं द्वारा अपने परिवार के साथ निवास करने में अच्छा लगता है, इसलिए सर्वाधिक कामकाजी महिलाएं जिले में अपने परिवार के साथ अपना जीवनयापन कर रही है।

सीधी जिले में महिलाओं के अत्यधिक कम आय के कारण व्यवसाय की तरफ प्रेरित करती है। वे अधिकांशतः अपने जीवन को सुखमय बनाने और आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु चिन्तित रहती है। उनकी

आरम्भिक आवश्कताएं यथा मकान, कपड़ा व भोजन को पूर्ण करना चाहती है, जिनके हेतु उन्हें धनराशि की जरूरत पड़ती है। अतः इस तरह महिलाएं काम की तरफ अग्रसर होती है।

जिले के ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाली कामकाजी महिला की दशा इस पर आधारित होती है कि वे उस ग्रामीण अंचल की पुत्री अथवा बहु है। पारम्परिक तौर से एक ग्राम की बालिका की शादी उसी ग्राम में कदापि नहीं किया जा सकता है। युवा आयु वर्ग की बालिकाओं को ग्रामीण अंचलों में सर्वाधिक न्यून ही अविवाहित मिलती है। बालिकाओं का बहुत ही कम आयु में विवाह के बन्धन में बांध दिया जाता है। घर की समस्त कार्यों का भार बहुओं पर ही डाल दिया जाता है और उनको घर के बाहर जाकर काम करने को मना किया जाता है। घरेलू कार्यों में प्रमुख रूप से मां, पत्नी की भूमिका होती है। कामकाजी महिलाओं की कुशलता प्रमुख स्वरूप से परिवार, पड़ोस और दोस्तों में देखने को पायी जाती है, चरखा चलाना एवं सिलाई मशीन इत्यादि प्रमुख रूप से महिलाओं की कुशलता और आवश्यकता को पूर्ण करने का प्रमुख स्रोत माना जाता है।[3]

हमारे आर्थिक जीवन को अर्थव्यवस्था काफी प्रभावित करती है। आर्थिक जीवन से आशय प्रमुख रूप से रहन–सहन के स्तर से है, जीवन हेतु आवश्यक सामग्रियों का उत्पादन उसका वितरण और उपभोग करना ही आर्थिक प्रक्रियाओं का आधार और लक्ष्य होता है। जीवन की दिन प्रतिदन की सर्वाधिक आवश्यकताओं को न्यून से न्यून मेहनत से पूर्ण संगठित करना ही अर्थव्यवस्था है। यह व्यवस्थित ढंग से सीमित संसाधनों के माध्यम से असीमित साध्यों की सर्वाधिक संतुष्टि का प्रयास है। मनुष्य के माध्यम से अपनाये गये वे क्रियाकलाप जिसके द्वारा वे अपनी भौतिक एवं अभौतिक दोनों प्रकार के साधनों की व्यवस्था करते हैं और उनके उपभोगों में से कुछ को अपनाते हैं। शुरू में विकास के माग की जरूरतें काफी कम थी, कपड़ा और भोजन के स्वरूप में थोड़ी सी फल और छाल ही उनकी जरूरतें थी। अतः आर्थिक प्रक्रियाएं असीमित था। लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य की आवश्यकताओं में काफी वृद्धि हुई है। इन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं को भी अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। सीधी जिले की शासकीय सेवारत महिलाओं की सविचार प्रविधि द्वारा चयन कर साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्राथमिक स्तर पर संकलित तथ्यों को सारणी क्रमांक 3 में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक 3
कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

क्रमांक	महिलाओं की आर्थिक स्थिति के आधार पर	संख्या	प्रतिशत
1	कामकाजी महिलाओं द्वारा आय	84	28
2	कामकाजी महिलाओं द्वारा व्यय	66	22
3	कामकाजी महिलाओं द्वारा धन संचय	96	32
4	आय व्यय सम्बन्धी वाद विवाद	54	18
	कुल योग	300	100

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 3 को देखने से प्रतीत होता है कि यह सीधी जिले के कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति के विवरण से सम्बन्धित है, जिनमें कामकाजी महिलाओं से उनका उत्तर जानने के लिए साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्रश्न पूछे गये जिसमें 84 महिलाओं ने बतलाया कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए घर से बाहर काम करती हैं, जिनका प्रतिशत 28 है, 66 व्यक्तियों ने बतलाया कि अपने परिवार के जरूरतों के अनुसार व्यय करती हैं, जिनके प्रतिशत 22 है। 96 महिलाओं ने बताया कि धन अर्जन करने के साथ ही साथ वे धन संचय भी करती है, जिनके प्रतिशत 32 है और 54 महिलाओं ने बताया कि आय को लेकर कभी–कभी पति से वाद विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिनके प्रतिशत 18 है। अतः इससे सुस्पष्ट होता है कि जिले के सर्वाधिक चयनित कामकाजी महिलाएं धन अर्जन के साथ ही साथ वे धन संचय भी करती हैं। वे अपनी आय का तकरीबन 50 प्रतिशत भविष्य हेतु जमा करती है और अपने पारिवारिक दायित्वों का भी निर्वहन करती है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः मानव/व्यक्ति के जीवन को आर्थिक क्रियायें काफी प्रभावित करती है। आधुनिक युग में तो इसके बगैर जीवन की गतिशीलता ही संभव नहीं है। यदि व्यक्ति को आर्थिक सम्पन्नता न रहे तो उनका जीवन वर्तमान कसौटी पर सेवा, समय, करूणामय और अत्यधिक भयावह हो जाता है। आर्थिक प्रक्रियाएं मनुष्य के जीवन के साथ उनके परिवार, समाज और पर्यावरण को भी प्रभावित करती है। अधिकांशतः यह दृष्टिगत है कि अर्थ जीवन के भिन्न–भिन्न पक्षों के परिवर्तन में किस प्रकार सक्रिय होता है। खान–पान, रहन–सहन और सामाजिक परिस्थिति में आर्थिक प्रक्रियाएं सक्रिय रहता है। उदाहरण स्वरूप समाज एक पूंजीपति तथा एक मजदूर की प्रस्थिति भिन्न–भिन्न होता है। एक सम्पन्न घराने की महिला एवं एक निम्न घर की महिला में जीवन की गतिशीलता में व्यापक अन्तर परिलक्षित होता है। इस तरह आर्थिक क्रियाएं व्यवहार और विचारों के बदलाव में भी सक्रिय होता है। व्यक्ति के जीवन में आर्थिक पहलुओं का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक सुदृढ़ता व्यक्ति के जीवन शैली को काफी प्रभावित करती है। व्यक्ति की गतिशीलता में अर्थ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होता है। वर्तमान समय में समाज में भौतिकता द्वारा जिस प्रकार से पैर फैलाया गया है, उनमें अर्थ का एक महत्वपूर्ण विशिष्ट स्थान है। आर्थिक कारक समाज एवं व्यक्ति को काफी प्रभावित कर रहे हैं और यह प्रभाव समाज में नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों प्रकार से होता है।

संदर्भ –

[1]एच.एल. कैला – मनोविज्ञान का परिचय, ए.आई.टी.बी.एस. पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2008, पृष्ठ 255

[2]प्रमिला कपूर – कामकाजी भारतीय नारी, दिल्ली विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 1974, पृष्ठ 115

[3]नीरा देसाई, – वूमेन इन मार्डन इण्डिया, वोरा एण्ड कम्पनी, पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड वर्क्स, वर्ष 1979, पृष्ठ 99

×××